तक़्वीयतुल ईमान की एक इबारत और हकीकी गुस्ताखी

قَالَ رَبِّ ٱشۡرَحۡ لِى صَدۡرِى ﴿٢٥﴾

وَيَسِّرۡ لِىٓ أَمۡرِى ﴿٢٦﴾

وَٱحۡلُلۡ عُقۡدَةً مِّن لِّسَانِى ﴿٢٧﴾

يَفۡقَهُواْ قَوۡلِى ﴿٢٨﴾

शाह इस्माईल देहलवी अपनी मशहूर किताब ''तक़्वीयतुल ईमान'' मे एक जगह लिखते है :-

''और ये यकीन जान लेना चाहिये कि हर मखलूक बड़ा हो या छोटा अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़लील है ।'' (तक़्वीयतुल ईमान सफा 8)

शाह ईस्माईल देहलवी की ये इबारत देखने के लिये मुलाहिज़ा करे मजीद बरेलवी किताब मुनाज़रा झन्ग (सफा 156), इबारते अकाबिर का तहकीकी व तनकीदी जायज़ा (हिस्सा अव्वल सफा 103-104)

बरेलवी एतराज़

बहुत से बरेलवी उलेमा और दौर हाज़िर के उलेमाए सू का कहना है कि :–

''हर छोटी और बड़ी मखलूक के मानी रसुले करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और औलियाए आज़म का होना मुतईन हो गया है....... अब उन्हे बारगाहे खुदावंदी मे मआज़ अल्लाह चमार से ज्यादा ज़लील कहना जिस किस्म की शदीद तौहीन है, मुहताज–ए–बयान नहीं ।''

एक बरेलवी उलेमा ने तक्वीयतुल ईमान की ईबारत पेश करते हुए कहा :–

''इस इबारत के उमूम के अन्दर तमाम फरिश्ते भी दाखिल है क्योकि वो भी मख्लूक मे शामिल है ।'' (इबारते अकाबिर का तहकीकी जायज़ा सफा 393)

पढ़ने वाले हज़रात से दरख्वास्त है कि एतराज़ के इस हिस्से को संजीगदी से ज़हेन नशीन कर ले ।

जवाब :–

जवाब देने से पहले मै मनहज अहले हदीस का ताअरूफ जरूरी समझते हुए बहुत कम अल्फाज़ मे बताने की कोशिश करता हूं कि अहले हदीस से मुराद वह शख्स जिसने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक अपने लिए अपने पालनहार यानि अल्लाह और उसके प्यारे नबी मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की इताअत के अलावा किसी और, यानि गैर नबी के कौल फेअल को अपने लिए हुज्जत तस्लीम नही किया । शाह साहब का भी कोई कौल या फेअल जो अगर बिलफर्ज सुन्नत के खिलाफ पाया गया तो यकीन जानिये कोई भी अहले हदीस ऐसे कौल और फेअल को यकीनन रद्द कर देगा । और ये भी जान लीजिये कि आज के दौर मे शायद ही कोई दुसरी जमाअते अपने अकाबिर की गैर शरअी बातो को रद्द करने की हिम्मत दिखा पाती है ।

ये जवाब सिर्फ इसलिये दिया जा रहा है कि शाह साहब की इबारत का गलत मतलब निकाल कर भोले भाले लोगों को गुमराह किया जा रहा है ।

तकवीयतुल इमान की इस इबारत मे शाह साहब ने हरगिज़ तौहीन या गुस्ताखी का इर्तकाब नही किया बल्कि जो लोग छोटी या बड़ी मख्लूक के उमूमी अल्फाज़ को अंबिया औलिया और फरिश्तो के साथ खास करते या निसबत देते है वो गुस्ताखी के मुरतकब है । उमूमी अल्फाज़ को खास कर के तौहीन का मफहूम अख्ज़ (निकालना) करना सक्त ना इंसाफी और बातिल व मर्दूद है ।

शाह साहब ने अंबिया औलिया व मलाईका की निस्बत ज़लील लफ्ज़ की तरफ नहीं की बल्कि उमूमी तौर पर हर छोटी बड़ी मख्लूक को अल्लाह की शान के सामने ज़लील करार दिया है । उमूमी तौर पर तमाम मख्लूक को ज़लील कहना अलग बात है और खास अंबिया या औलिया की तरफ (नाऊजुबिल्लाह) जिल्लत को मन्सूब करना अलग बात है और ये उसूल खुद बरेलवी उलेमा को भी तस्लीम है ।

बरेलवियों का तस्लीम शुदा उसूल

चुनांचे मशहूर बरेलवी मुनाजिर व आलिम अशरफ सयालवी ने कहा :–

''एक है उमूमी तौर पर मख्लूक को ज़लील कहना और एक है खास तौर पर किसी शख्सियत का नाम ले कर उसे ज़लील कहना तो उमूम और तख्सीस के अंदर फर्क वाजेह है ।''(मुनाजरा झंग सफा 172)

इंसाफ शर्त है कि जब खुद तस्लीम है कि उमूमी तौर पर मख्लूक को ज़लील कहना मे और खास किसी को ज़लील कहने मे फर्क है तो फिर शाह इस्माईल देहलवी की उमूमी इबारत को अंबिया व औलिया, मलाईका की तरफ खास कर के तौहीन अख्ज़ करना सरही धोखा धड़ी और फरेब नहीं तो क्या है ?

बरेलवी उलेमा व अकाबिरीन तक़्वीयतुल इमान की इस उमूमी इबारत को खास करते हुए जिस तरह एक बातिल मफहूम के तहत गुस्तखाना व तौहीन आमेज़ बताते आये है, इस तरीके पर तो खुद बरेलवी उलेमा व अकाबिरीन अपनी बहुत सी बातो और इबारतो के सबब गुस्ताख करार पाते है – मुलाहिजा फरमाईये :–

1. बरेलवियों के ''अअला हज़रत'' अहमद रज़ा खान बरेलवी ने एक आयत का तर्जुमा करते हुए लिखा :–

(यहां देखिये अल्लाह के प्यारे रसुल मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के नाम गिरामी के साथ सिर्फ हज़रत लिखा जाता है पर अपने अकाबिर के साथ अअला हज़रत वाह)

''बेशक तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा तुम पुजते हो सब जहन्न्म के ईधन हो।''(कंजुल इमान, सुरह अंबिया आयात नं0 98)

इस आयत के बरेलवी तर्जुमा से साफ ज़ाहिर है कि कुफ्फार व मुशरिकीन के साथ साथ जिन जिन को वो पूजते और इबादत करते है वो भी जहन्नम का ईधन है – ये बात साबित व मुस्लिम है कि ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन की वालिदा मरयम अलैहिस्सलाम को पूजते हुए अपना माबूद बना लिया जिस पर खुद कुरआन गवाह है (देखिये सुरह माईदा आयत 116)

उमूमी अल्फाज़ को खास बना कर गुस्तखाना मतलब निकालना जैसा कि तक़्वीयतुल इमान की इबारत मे बरेलवी उलेमा व अकाबिरीन का तरीका रहा है, इस की बुनियाद पर इस आयत के तर्जुमा को मतलब ये बनेगा कि अल्लाह के सिवा जिन जिन को पूजा जाता है उन मे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा भी शामिल है, जहन्नम का .... (नाऊजुबिल्लाह व मिन ज़ालिक) मालूम हुआ कि उमूमी अल्फाज़ को अंबिया व औलिया की जानिब मंसूब करना खुद सबसे बड़ी गुमराही और उन मोअज़्ज़िज़ हस्तियों की शदीद तौहीन

है ।

2. अहमद रज़ा खान बरेलवी ने कहा :–

''लोग अल्लाह के सिवा जिन जिन को पूजते है वो सब झूठे है ।''(मलफ़ूज़ात–हिस्सा अव्वल सफा 82)

खान साहब बरेलवी का ये मलफ़ूज़ भी तकवीयतुल इमान की तर्ज पर गुस्ताखी करार पाता है । लोग जिन जिन को पुजते है उनमे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम भी शामिल है । चुनांचे इस मलफ़ूज़ का मतलब ये बनता है कि बरेलवी आला हज़रत ने ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम को भी झूठा करार दे रखा है (नाऊजुबिल्लाह) और ये उनकी शदीद तौहीन और गुस्ताखी है ।

अगर अहमद रज़ा खान बरेलवी के इस उमूमी मलफ़ूज़ को खास करते हुए गुस्ताखाना मफहूम निकालना सही नहीं तो फिर तकवीयतुल ईमान मे शाह साहब की उमूमी इबारत के साथ ये जुल्म और नाइंसाफी क्यों ?

3. अहमद रज़ा खान बरेलवी ने एक शेअर यूं कहा :–

वाह क्या मर्तबा ऐ गौस बाला है तेरा
ऊंचे ऊंचो के सरो से कदम आला तेरा (हदाईक बख्शिश हिस्सा अव्वल सफा 8)

इस शेअर मे अहमद रज़ा खान बरेलवी ने शेख अब्दुल कादिर जिलानी के मरातिब को बयान करते हुए उन के कदम को ऊंचे ऊंचों के सरो से भी आला करार दिया है । हर छोटी बड़ी मख्लूक के उमूमी अल्फाज़ मे अंबिया, औलिया को शामिल कर के गुस्ताखी और तौहीन का मतलब निकाला जाता है तो इस शेअर मे तो बात ही ऊचें ऊचों की है, हर छोटी बड़ी मख्लूक मे अंबिया,औलिया शामिल है तो ऊचें ऊचों के अल्फाज़ तो दलालत ही ऊचें

मर्तबो वाले अंबिया व औलिया और बिल खूसूस इमामुल अंबिया नबी ए करीम सल्लाल्ललाहू अलैहि वसल्लम पर करते है । क्या बरलेवी मन्तक के लेहाज़ से ये कहना दुरूस्त न होगा कि :–

''ऊचे ऊचों के माअनी रसुले करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और औलियाए आज़म का होना मुतईन हो गया है .... । अब शेख अब्दुल कादिर जिलानी का कदम उन ऊचें ऊचों के सरो से भी आला कहना जिस किस्म की शदीद तौहीन है मुहताज ए बयान नहीं ।''

अल्फाज़ से फैसला कीजिये की जो बातिल मफहूम तकवीयतुल इमान की इबारत का बरेलवी उलेमा व अकाबिरीन पेश करते आये है क्या इसी तरह फिर ये शेअर गुस्ताखी व तौहीन के एतबार से ज्यादा संगीन नहीं ?

4. बरेलवियो के तस्लीम शुदा वली व बुजुर्ग सुल्तान मशाईख महबूब आला ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ने फरमाया :–

''किसी का इमान उस वक्त तक मुकम्मल नहीं होता जब तक वो सारी मख्लूक को ऊंट की मेगनी जैसा न समझे ।'' (फवाइद अल फवाइद जिल्द दो आठवी मजलिस सफा 251)

जिस तरह शाह साहब की इबारत मे छोटी बड़ी मख्लूक के उमूमी अल्फाज़ मौजूद है उसी तरह इस मलफूज़ मे सारी मख्लूक के उमूमी अल्फाज़ मौजूद है जिस मे अंबिया औलिया भी शामिल है । यहां पर बरेलवी उलेमाओ की तर्ज पर ये कहना क्यो दुरूस्त नही कि :–

''इस इबारत के उमूम के अंदर तमाम फरिश्ते भी शामिल है क्योकि वो भी अल्लाह की मख्लूक मे शामिल है । और इसी तरह मख्लूक के माअनी रसुले करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और औलियाए आज़म को शामिल होना मुतईन हो गया है .... । अब उन्हे

ऊंट की मेगनी (नाऊज़ुबिल्लाह) की तरह समझना जिस किस्म की शदीद तौहीन है मुहताज ए बयान नहीं ।''

अगर इस के जवाब मे ये तस्लीम किया जाता है कि ''एक है उमूमी तौर पर मख्लूक को ज़लील कहना और एक है खास तौर पर किसी शख्सियत का नाम ले कर उसे ज़लील कहना तो उमूम और शख्सियत के अंदर फर्क वाजेह है ।'' तो फिर आज तक बरेलवी उलेमा व अकाबिरीन तकव्वीयतुल इमान की उमूमी इबारत को अंबिया औलिया की तरफ मंसूब कर के क्यो गुस्तखाना और तौहीन आमेज मतलब पहनाते रहे है ? क्या बरेलवी उलेमा व अकाबिरीन के इस तर्जे अमल की रौशनी मे सब से पहले खुद अहमद रज़ा खान बरेलवी और दुसरे तस्लीम शुदा बरेलवी बुजुर्ग गुस्ताख करार नहीं पाते ?

5. शेख अब्दुल कादिर जिलानी का एक कौल नकल करते हुए अहमद रज़ा खान बरेलवी ने लिखा :-

''मेरा ये कदम हर वलीउल्लाह की गरदन पर है ।'' (फतवा रिजविया जिल्द 28 सफा 363)

तकव्वीयतुल इमान की इबारत मे तो ''हर मख्लूक छोटा हो या बड़ा'' की उमूमी अल्फाज मौजूद है जबकि अहमद रखा बरेलवी की तस्लीम शुदा इस कौल मे ''हर वलीउल्लाह'' के अल्फाज़ तमाम सहाबा किराम रजिअल्लाह अन्हूम व ताबईन आज़म रहमतुल्लाह अलैह बल्कि तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम को भी शामिल है क्योकि तमाम अंबिया नबूवत के साथ साथ बिला शक विलायत से भी सरफराज होते है बल्कि बरेलवियों के यहां तो अंबिया की विलायत उन की नबूवत से भी अफज़ल मानी जाती है । चुनांचे अहमद रज़ा खान बरेलवी ने कहा :-

''नबी की विलायत उस की नबूवत से अफज़ल है ...।''(मलफूज़ात दो सफा 293)

एक जगह अहमद रज़ा फरमाते है :–

''औलिया का इतलाक ....हर महबूबे खुदा, अंबिया बल्कि मलाईका को भी शामिल'' (फतावा रिजविया जिल्द 10 सफा 810)

जब ये तस्लीम है कि औलिया का इतलाक हर महबूब खुदा अंबिया बल्कि मलाईका पर भी होता है तो फिर ये कहना कि ''मेरा कदम हर वलीउल्लाह की गर्दन पर है'' बरेलवी उसूल पर क्यो गुस्ताखी व तौहीन नहीं ? हर मख्लूक छोटा हो या बड़ा के उमूमी अल्फाज़ मे बड़ी मख्लूक को सराहत बताना फिर गुस्ताखी गुस्ताखी का शोरा मचाना और ''हर वलीउल्लाह'' के सरहीह अल्फाज़ मे बिला दलील सही मानना, इंतेहा दर्जे की ना इंसाफी और जुल्म नहीं तो क्या है ? अपनी इस दोगली पॉलिसी से तौबा और रूजु करने के बजाए ढिठाई से बातिल ताविलात पर डटे रहना दूसरो के बजाए खुद को ही धोखा देना है ।

शेख अब्दुल कादिर जिलानी से मंसूब इस कौल की वजाहत व तावील मे अहमद रज़ा खान बरेलवी ने लिखा :–

''इस लफ्ज़ (औलिया) का तीसरा इतलाक अख्ज और है जिस मे सहाबा बल्कि ताबईन को भी शामिल नहीं रखते कि वो इस्माए खास से मुमताज़ है .....'' (फतावा रिजविया जिल्द 10 सफा 811)

गोया अहमद रज़ा खान बरेलवी के नज़दीक शेख अब्दुल कादिर जिलानी के कौल ''मेरा कदम हर वली अल्लाह की गर्दन पर है ।'' मे सहाबा व तबाईन इस लिये शामिल नहीं कि ये हज़रात सहाबा व तबाईन के खास नामो से मुमताज़ है । इस रज़ा खानी उसूल पर तो तकव्वीयतुल इमान की इबारत तो बिला शर्त गुस्ताखी व तौहीन से पाक करार पाती है क्योकि जब हर वली के इतलाक मे सहाबा व तबाईन शामिल न समझे गये कि ये हज़रात एक खास नामो से मुमताज़ है तो हर बड़ी मख्लूक के इतलाक मे भी अंबिया व औलिया व मलाईका शामिल नहीं क्योकि ये अलग खास नामो से मुमताज़ है । वलहम्दुलिल्लाह ।

नतीजा

इस सारी बहस व दलाईल से ये बात बिल्कुल वाजेह और रौशन है कि उमूमी अल्फ़ाज़ को खूसूसी मायने देकर तौहीन व गुस्ताखी का मफहूम अख़्ज करना इंतेहाई जुल्म और बातिल है बल्कि सिवाए लोगों को धोखा देने और उन के दीनी जज्बात से खेलने के कुछ भी नहीं ।

मगर ये तयशुदा और मुस्लिम है कि अगर अंबिया का नाम लेकर या खास उन की तरफ़ जिल्लत को मसूंब किया जाए तो ये यकीनन उन की शदीद गुस्ताखी और तौहीन है । अब इस तय शुदा और तस्लीम शुदा बात को मद्दे नज़र रखते हुए खुद फैसला कीजिये कि हकीकी गुस्ताख कौन है .... ?

हकीकी गुस्ताख कौन .... ?

अहमद रज़ा खान बरेलवी नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्ल्म की शान मे फरमाते है :-

कसरत बाद किल्लत पे अक्सर दरूद
इज्ज़त बाद जिल्लत पे लाखो सलाम (हदाईक बख्शिश हिस्सा दो सफा 36)

इस शेअर मे बरेलवी आला हज़रत ने शदीद गुस्ताखी और तौहीन का इर्तकाब करते हुए नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की जानिब जिल्लत को मन्सूब किया है कि जिस तरह आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को किल्लत के बाद कसरत हासिल हुई उसी तरह इज्ज़त भी बाद जिल्लत के मिली (नाऊजुबिल्लाह व मिन ज़ालिक) दूसरो की उमूमी इबारात से गुसूताखी का मतलब निकालने वाले देखे किस दीदा दिलेरी से इमामुल अंबिया सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की तौहीन कर रहे है ।

इस तरह की ढेरो गुस्ताखी बरेलवी आलिमो की किताबो मे महफूज़ है मगर हम उनपर

कोई तज़किरा न करते हुए यही पर बस करते है ।

इस गवाही से भी बिल्कुल वाजेह और रौशन है कि अहमद रज़ा खान ने नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारका के ही अवसाफ व मुहासिन बयान करते हुए आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये (नाऊजुबिल्लाह) जिल्लत को साबित करना चाहा है जो कि आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की शान मे शदीद तौहीन और गुस्ताखी है । अगर कोई बरलेवी इस शेअर के खिलाफ हकीकत मफाहूम या गोल मोल जवाब पेश करते है तो वो सिर्फ धोखा व फरेब है और मजीद इस बात का सबूत है कि बरेलवी हज़रात अपने बड़ो के सरीह गुस्ताखाना व तौहीन आमेज़ नज़रियात पर पर्दा डालने के लिये दोगले ओर मुनाफिकाना तर्जे अमल का शिकार है ।

अल्लाह हम सब को हक पर जमे रहने की तौफीक दे । आमीन ।

वा आखरूदवानि वलहम्दुलिल्लाहे रब्बिल आलमीन ।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर,
रायपुर, छत्तीसगढ़